Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com

ISSN : 2321- 4708
Sep 2019, Year - 6 (77)
Paper ID : RRJ000063

सूक्ति काव्य : अध्यन

: संशोधक :

डॉ. शारदा विनुभाई राठोड

प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,

श्री आर. आर. लालन कोलेज, भुज (गुजरात)

वह काव्य, जिसमें कवि के जीवन-अनुभवों का सार चेतावनी के रूप में अभिव्यक्त होता है । सूक्तिकाव्यकार का लक्ष्य पाठक का मनोरंजन करना नहीं, बल्कि उसमे इहलौकिक और पारलौकिक जीवन का परिमार्जन और परिशोधन करना होता है, वह मानवप्रकृति को उसके विभिन्न सामाजिक और आध्यात्मिक सम्बन्धों में समझता-बूझता है । जब उसके मानस में किसी सम्बन्ध का एक विशेष कोण सामने आता है तो उसे वह बहुत कुछ निष्कर्षात्मक रूप में सामने रखता है । इतना तो प्रथम चरण रहा जिसे हम सूक्ति कहेंगे, किन्तु इस सूक्ति को सूक्तिकाव्य बनने में काव्योपादानों से संयुक्त होना पडता है, ये काव्योपादन प्रायः चित्रमूलक अलंकार होते हैं ।

सूक्तिकाव्य मुक्तक रूप में तो लिखे ही जाते हैं प्रबन्धों में भी कहीं आ जाते हैं । इनमें जो बहुत ही सुन्दर या नैतिकतापूर्ण सूक्तियाँ होती हैं, उन्हें सुभाषित कहा जाता है ।

संस्कृत में सूक्तिकाव्य बहुत लिखा गया है । चाणक्य भोजराज, वररुचि, वैतालभट्ट, भर्तृहरि आदि संस्कृत अनेक रचनाकारों ने स्वतन्त्र सूक्तिकाव्यों की रचना की । हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण और प्रबन्ध चिन्तामणि आदि में भी पर्याप्त संख्या में सूक्तिकाव्य का सन्निवेश हुआ है । हिन्दी में भी रहीम, तुलसी आदि अनेक सूक्तिकार हुए हैं । भक्तिकाव्य ओर श्रृङ्गारकाव्य के लेखक भी कभी-कभी अपने क्षेत्र से हटकर सूक्तियों की रचना कर लेते हैं ।

'सूक्ति' की प्रदत्त परिभाषाएँ :

सूक्तियाँ साहित्य गगन में देदीप्यमान उज्जवल नक्षत्र के समान हैं । इनकी आभा देश और काल की संकुचित सीमा पार करके सर्वदा एक समान और एक रस रहनेवाली हैं । विधाता की इस मानवसृष्टि में सूक्तियाँ कल्पतरु के समान हैं । इनकी विस्तृत सघन छाया में जीवनपथ की थकान ही दूर करने की शक्ति नहीं है, प्रत्युत भविष्य की दुर्गम यात्रा को सुखपूर्वक समाप्त करने का इनमें अक्षय तथा दैवी सम्बल रहता है ।

सूक्ति का स्वरूप अथवा सूक्ति का अर्थ समझने के लिए कतिपय विद्वज्जनों ने सूक्तियाँ की परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं ।

(क) डॉ. रामकुमार वर्मा :

जीवनभर के कितने अनुभवों का अमृत सिंचन सूक्ति के एक बिन्दु में रहता है।[६]

(ब) डिजरायली :

ज्ञानियों का ज्ञान और युगों का अनुभव सूक्तियों द्वारा सुरक्षित रहते हैं ।[७]

(ग) डॉ. जानसन :

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-6-issue-77-September-2019/RRJ000063

प्रत्येक सूक्ति भाषा के विस्तार और उसे चिरस्थायी बनाने में सहयोग देती हैं।[८]

(घ) डॉ. गिरिजाशङ्कर त्रिवेदी :

वाग्व्यवहार को यदि समुद्र मान लिया जाय तो कहा जा सकता है की उसके मंथन से निकलनेवाले रत्नों का नाम ही सुभाषित या सूक्तियाँ हैं । सूक्तियाँ चिन्तन का नवनीत हैं ।

इस प्रकार सूक्ति का तात्पर्य है – सुभाषित अर्थात् उपयुक्त कथन । ऐसा सुन्दर उपयुक्त कथन जो शाश्वत हो; सार्वकालिक हो तथा देश–काल की सीमा से परे हो । सूक्तियाँ अथवा सुभाषित अनुभववृद्ध और ज्ञानवृद्ध मनीषियों के अन्तः करणरुप आकाश पटल पर प्रादुर्भूत होनेवाले ऐसे मन्त्र है जो श्रोता के कर्णकुहर से सीधे उसके अन्तःकरण में प्रविष्ट हो जाते हैं और उसे जीवन में सफलता प्रदान करने में परम सहायक होते हैं ।

सूक्तिरचना का कालानुसार एवं विषयानुसारी विभाजन :

सूक्ति का आदिम स्रोत वेद है और सूक्ति का वाङ्मय भी वेद है । वैदिक सूक्त से सूक्तिवाङ्मय का कालानुसारी आरंभ हुआ । विषयवैविध्य की दृष्टि से समृद्ध सूक्तिवाङ्मय हमे प्राप्त होता रहा हैं । वेदो के बाद शिक्षादि वेदाङ्ग में उपनिषदादि वेदान्त में, ब्रह्मणादि विधिग्रन्थों में प्रभूत सूक्तियाँ मिलती रही और इस तरह हमारा वाङ्मय भी समृद्ध होता चला । ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद हैं । आयुर्वेद सम्बन्ध ग्रन्थों में सुभाषितों और सूक्तियों का भण्डार मिलता है वैसे संस्कृत साहित्य की शायद ही ऐसी कोई शाखा हो जिसकी रचनाओं में हजारों सुभाषित न भरे पड[3] हो।

(१) आयुर्वेद सम्बद्ध ग्रन्थों में सूक्तियाँ :

डॉ. भास्कर गोविन्द धाडेकर ने आयुर्वेद सम्बद्ध सुभाषितों का एक संग्रह – ''वैधकीय सुभाषित संग्रह' नाम से तैयार किया है । जिसमें चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग संग्रह, अष्टांग हृदय, आयुर्वेद दीपिका, चक्रपाणिदत्तीय संग्रह, धन्वन्तरि निघण्टु, माधवनिदान, राजनिघण्टु, वैधचन्द्रोदय, हस्त्यायुर्वेद जैसे ग्रन्थों का उद्धहरण है ।

(२) अंगभूत शास्त्रों से सम्बद्ध ग्रन्थों में सूक्तियाँः

कामशास्त्र :

शृंगाररस साहित्य का उपादान जहाँ जहाँ पाया गया है वहाँ कामशास्त्रीय सूक्तियाँ प्राप्त होती हैं । सुभाषितरत्नभाण्डागार, सदुक्तिकर्णामृत, शाङ्गधरपद्धति, सूक्तिमुक्तावली, पधावली, सुभाषितनीवी, रसिकजीवनम्, आदि सुभाषित ग्रन्थों में कामशास्त्रीय एवं शृङ्गरपरक सूक्तियाँ सविशेष प्राप्त होती हैं ।

ज्योतिषशास्त्र :

संस्कृत साहित्य में ज्योतिषाचार्यो का भी बड[3]ा योगदान रहा हैं । ज्योतिष का सम्बन्ध संस्कृत वाङ्मय से जुडा हुआ है । सूक्तिमुक्तावली, रत्नभाण्डागर, पधतरंगिणी, सुभाषितावली – आदि सुभाषितग्रन्थों में ज्योतिष विषयक सूक्तियाँ मिलती हैं ।

सूक्ति स्वरूप में विद्वज्जनों के विचार :

सुभाषित अथवा सूक्ति का स्वरूप समझने के लिए कतिपय विद्वज्जनों की सम्मतियाँ भी प्रस्तुत हैं –

ISSN : 2321- 4708
Sep 2019, Year - 6 (77)
Paper ID : RRJ000063

(१) प्रिंसिपल हृदयनारायण सिंह :

यदि वाङ्मय को हम हरीतिमा पुंज का रूपक दें तो सूक्तियों को हमें सुवासित पुष्प की संज्ञा देनी पड़ेगी, पुष्प जैसे हमारी घ्राण तथा चाक्षुष शक्तियों को आह्लादित करता है वैसे ही सूक्तियाँ हमारे मन तथा मस्तिष्क को पुलकायमान करती हैं ।

सूक्तियों में मनीषियों के चिनतन, अनुभूति, परीक्षा और कल्पना के तत्त्व, सारभूत सत्य निहित होते हैं । उनके द्वारा जीवनयात्रा में हमें स्फूर्ति, प्रोत्साहन, मानसिक बल प्राप्त होता है । वे जीवन के अन्धकारपूर्ण क्षणों में प्रकाश–किरण का काम करती हैं ।